पढ़ीस की काव्यगत विशेषताएं

डॉ देविका शुक्ल
असिस्टेंट प्रो0 हिंदी विभाग
श्री जे एन पी जी कॉलेज, लखनऊ।

पढ़ीस जी आधुनिक अवधी काव्य के प्रमुख रचनाकार रहे हैं। सामाजिक जीवन की गहरी अनुभूति इनके काव्य में विद्यमान है। अवधी काव्य की जो धारा आधुनिकता की चकाचौंध में सूखने लगी थी उसे पढ़ीस जी ने अपनी मूलक प्रतिभा से नया धरातल प्रदान किया। पढ़ीस जी ने अपने काव्य में नए जागरण का भाव भरा। 'चकल्लस' इनकी महत्वपूर्ण काव्य-रचना है, जिसमें नवीन भावों, नए विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रवाहपूर्व शैली में व्यक्त किया गया है। 'चकल्लस' पढ़ने पर कवि के ग्रामीण अनुभवों की व्यापकता का पता चल जाता है। ग्रामीण जीवन को कवि ने प्रायः सभी संभव दृष्टिकोण से देखा है। समय-समय पर समाज जहां रुका है और ठोकर खाकर व्यथित हो आगे आगे बढ़ा है, उन सबका सुंदर आंकलन इस काव्य कृति में मुखर हुआ है। 'चकल्लस' सन 1933 ईस्वी में 'गंगा माइन आई' से प्रकाशित पढ़ीस जी की एकमात्र अवधी काव्य कृति है। इन रचनाओं के माध्यम से भारतीय ग्राम्य जीवन का अत्यंत यथार्थ और मार्मिक रूप उभर कर सामने आया है। कवि ने इसमें अवध प्रदेश के अंतर्गत प्रचलित देशज शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है। इस कृति का परिचय देते हुए कविवर निराला ने लिखा है- "देहाती भाषा होने पर भी जहां तक काव्य का संबंध है, 'चकल्लस' अनेक गुणों से भूषित है। इसके चित्र सफल एवं सार्थक हैं, स्वाभाविकता पग-पग पर है।..... हिंदी के अनेक सफल काव्य से यह बढ़कर है, मुझे कहते हुए संकोच नहीं।"

सामाजिक कुरीतियां एवं बुराइयां उनके काव्य में देखी जा सकती हैं। सन 1925 ईस्वी के उपरांत पढ़ीस जी का व्यंग्य काव्य प्रकाश में आया, जो अत्यंत मौलिक एवं प्रभावकारी है। 'चकल्लस' आधुनिक अवधी की अनूठी कृति है। इसके नाम से तो यह लगता है कि यह कृति हास्य-व्यंग्य से भरपूर हल्के मनोरंजन के लिए लिखी गई है, किंतु उसके कथ्य और शिल्प पर ध्यान पूर्वक दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि इसमें छायावादी काव्य के अनुभव, कोमल सौंदर्य विधान, प्रकृति का मार्मिक अंकन तथा आंतरिक भावों की अनुभूति है। इस पुस्तक की अधिकांश कविताओं में छायावादी

प्रभाव परिलक्षित होता है। 'चकल्लस' की द्वासरि दुनिया, सूखी डार, डोंगिया, स्वनहुली स्यामा, बिटौनी, परछाहीं आदि रचनाएं इसका प्रमाण हैं।

प्रकृति चित्रण:

हमारे अवधी के कवि अधिकांशतः गांवों के ही निवासी थे। उन्होंने गांवों की आत्मा का गहन मंथन किया है। उन्हें ग्राम-प्रकृति तथा ग्राम्य जीवन की सही एवं तीव्र अनुभूति है। अतः उन्होंने ग्रामीण प्रकृति के जो संश्लिष्ट चित्र उपस्थित किए हैं वे हिंदी के आधुनिक काव्य में ही नहीं, संपूर्ण हिंदी साहित्य में अनूठे हैं। इसका एक कारण और भी है, कवि पढ़ीस के शब्दों में - "ग्रामीण चित्रों का चित्रण शहरों में बैठकर शहरी भाषा में नहीं बनता।" खुरही, खुरपी, घसपिटनी के बिना एक घसियारे का यथार्थ चित्रण करना कठिन है। ग्राम्य प्रकृति के चित्रण की सफलता में ग्राम्य जीवन की तीव्र अनुभूति के साथ-साथ ग्राम्य भाषा भी हमारे कवियों की सहायक है-

बिरवन पर पंछी झूलि रहे, ख्यातन मा सरसइं फूलि रहे,

गोरू गउढी पर पुलकि-पुलकि, लीचर बछरा कुल्याल मारै

अल्हर छवि चितयि रही स्यामा।।

प्रकृति चित्रण के अंतर्गत कवि ने प्रकृति के कई रूपों का सुंदर चित्रण किया है, कतिपय रूप दृष्टव्य हैं-

(क) उद्दीपन रूप में प्रकृति चित्रण:

प्राकृतिक उपादानों में भावों को अभिव्यक्ति करने की असाधारण क्षमता होती है, अतः कवि परंपरा से इस संबंध में प्रकृति का उपयोग करते आए हैं। पढ़ीस जी के विरह गीत में प्रकृति का उद्दीपक रूप देखने योग्य है, कुछ पंक्तियां दृष्टव्य हैं-

पपीहा बोलि जा रे!

छिनु-छिनु पर छवि हायि न भूलयि, हूलयि हिया हमार

साजन आवै तब तुइ आये, आजु बोलि उई पार।

पपीहा बोलि जा रे!

(ख) अलंकार प्रदर्शन के रूप में प्रकृति चित्रण:

नील आकाश में बगुलों की पंक्ति उड़ रही है, उस संबंध में कवि का अलंकारिक चित्रण दृष्टव्य है, एक बिंब दर्शनीय है-

उजले-उजले बगुलन की पाँती उड़ती हयि,

सीधी, तिरछी, उलटी, टेढ़ी-मेढ़ी बनि कयि।

का स्याम समुंदरु की छाती पर बहती हयि,

पतरी-पतरी सुंदर, यी दूधे की धारयिं?

(ग) उपदेशिका के रूप में प्रकृति चित्रण:

हमारे लिए पृथ्वी क्षमा, पर्वत दृढ़ता, जल निर्मल सर-सरिता और वृक्षादि अनवरत सेवा एवं परोपकार का उपदेश देते हैं। यही कारण है कि संस्कृत साहित्य में प्रकृति से उपदेश गृहण करने की प्रवृत्ति का प्रचुर परिचय मिलता है। केशव, रहीम, बिहारी, वृंद तथा दीन दयालु गिरी आदि के नीति काव्यों में प्रायः उपदेशिका के रूप में ही प्रकृति का चित्रण हुआ है। अवधी के आधुनिक कवि भी इस प्रभाव से मुक्त नहीं हैं। घोर वर्षा के समय पानी के बुलबुले उठते और फूटते रहते हैं, कवि उनके इस सहर्ष व्यापार में जीवन की क्षणभंगुरता के दर्शन करता है-

पानी के बुज्जा सब, कस उठयिं बहयिं फूटयिं!

का जिंदगी क नकसा, अइसई बनि बनि बिगरई?

सौंदर्य बोध:

छायावादी प्रभाव होने के कारण पढ़ीस जी की रचनाओं में यत्र-तत्र सौंदर्य भी देखा जा सकता है। यह सौंदर्य दो रूपों में दिखलाई पड़ता है- एक मानवीय सौंदर्य दूसरा प्राकृतिक सौंदर्य। कवि ने दोनों का ही चित्रण पूरे मनोयोग से किया है। 'स्वनहुली स्यामा' एवं 'घसियारिन' कविताएं उदाहरण स्वरूप देखी जा सकती हैं। यहां कवि ने

स्यामा तथा घसियारिन के सहज रूप-सौंदर्य का चित्रण किया है, उदाहरण-

पातिन की पहुंची हाँथन मा, फूलन की चूरामनि बांधे,

मुँदरी कनफूल सिंकहुलन के, झुमका निमकौरी के झूलयिं

का! फूल परी उतरी स्यामा?

'स्वनहुली स्यामा' में कवि का छायावादी रूप स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है-

बरगद के तरे बावली पर, हिरदउ के भीतर भाउ भरी,

उतरी बिन पखनन केरि परी, वह चंद्रलोक की किरनि जयिसि,

साँवरि-साँवरि सुन्दरि स्यामा।

'स्वनहुली स्यामा' इसी लोक की सामान्य पनिहारिन है लेकिन छायावादी कवि की सौंदर्यानुभूति ने उसे अलौकिक बना दिया है। उसे साक्षात परी माना गया है। वह चंद्र किरणों से सुनहरी और स्वर्ण रेखा की सी देदीप्यमान है। भावों की यह अनूठी और दिव्य कल्पना छायावाद का अंग है।

रहस्यवाद:

जहां छायावाद का क्षेत्र केवल मनुष्य और जगत के संबंधों का सन्निवेश है, वहां रहस्यवाद के क्रीड़ा-स्थल में आत्मा-परमात्मा और जगत तीनों में है। रहस्यवाद समस्त विश्व में अपने इष्ट का सौंदर्य देखता है। वह अखिल विश्व के प्रभाव से अपने आपको अभिभूत पाता है। उसको शक्ति और सुंदरता का व्यापक प्रभाव क्षितिज के छोर तक दिखलाई पड़ता है। फलतः जब उसकी अनुभूतियां तीव्रतर होकर वाणी का रूप लेती हैं, तब रचना का निर्माण होता है। पढ़ीस कृत 'महतारी' शीर्षक रचना में इस तथ्य का को उदाहरण स्वरूप देखा जा सकता है-

तुम जौनी अखण्ड ज्योति आहिउ,

जगु जग-मगु जग-मगु करती हउ,

तुम सात समुंदरु पार बैइठि,

रहती हउ हमरी आँखिन पर।

स्पष्ट है कि कवि की यह मां सामान्य और बौद्धिक माँ नहीं है, बस वह अलौकिक एवं आदिशक्ति अंबिका है, जगदंबिका है। कवि ने अपनी रचना में उसकी अनुपम शक्ति उसके अनुपम सौंदर्य तथा संसार पर असामान्य प्रभाव के संकेत दिए हैं। यह संकेत रहस्य से पूर्ण हैं।

राष्ट्रीय एकता पर बल:

कवि अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्तिगत एकता का संदेश देता है। उसका मत है कि सभी वर्ण-संगठन की शिला पर खड़े होकर ही अपना एवं देश का कल्याण कर सकते हैं-

मुसलमान हिन्दू औ किरिस्तान

सब कोई हिलि मिलि कयि चलौ।

नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण:

नारी के प्रति पड़ी जी की यह धारणा है-

तुम नारी हउ, महतारी हउ, बहिनी-बिटिया सब कुछ आहिउ,

कन-कन से लइ सुखु का गुलालु, बरसौती हउ हमरे ऊपर।

सामाजिक कुरीतियों तथा बुराइयों पर तीव्र आक्रोश:

पढ़ीस जी की कविता में छायावादी प्रभाव के अतिरिक्त पाखंड कविता, पाश्चात्य पद्धति की शिक्षा का प्रभाव, हिंदू-मुसलमान एकीकरण की समस्या, आदर्श एवं धार्मिक मानव की परिभाषा, ग्रामीण चित्रण, दार्शनिकता एवं अंग्रेजी विशेषता आदि चित्रों को समाप्त किया गया है। अंग्रेजी शिक्षा एवं पाश्चात्य वेशभूषा से परंपरागत भारतीय सभ्यता में अंतर आने लगा था, उस समस्या पर भारतेंदु युग पर व्यंग्य किए जाने लगी थे। पढ़ीस जी ने इस विडंबना का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। पारिवारिक जीवन की समस्याओं को कवि ने बारीकी से पकड़ा है। नए युग के परिवार पुराने परिवारों से थोड़ा भिन्न होते जा रहे हैं, इसका मूल कारण पाश्चात्य धारा का चिंतन करना है -

लरिकउनू आये दफ्तर ते, दुलहिन अंग्रेजी बूक चली,

घर-बार गिरहिती चौपट कई, दुलहिन अंग्रेजी बूक चली।

आधुनिक भारत में पाश्चात्य संस्कृति की शिक्षा कितनी महंगी पड़ी है उसने किस प्रकार बेकारी को जन्म दिया है तथा भारतीय संस्कृति का हनन किया है, यह सर्वविदित है-

अल्ला-बल्ला सब बेंच-खोंच

दुइ सौ का मनियाडर किहिन

लारिकउनू एम ए पास किहिन।

प्रतीकात्मकता:

पढ़ीस जी की डोगिया छोटी कविता में प्रतीकात्मक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। इस कविता में डोगी मनुष्य के जीवन का प्रतीक है। राम-नाम के सहारे ही भवसागर को पार किया जा सकता है। डोगिया कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं-

राम की दुहाई फूँकि-फूँकि चलु, चलि जाए डगमग डोगिया।

भाषा एवं छंद:

पढ़ीस जी की भाषा पर्याप्त सुदृढ़ और अपनी-अपनी स्वाभाविकता लिए हुए सीतापुरी अवधी है। इनके काव्य में भाषागत शैथिल्य का दर्शन नहीं होता है। विचारों के अनुसार भाषा का प्रवाह है। इनकी कृति चकल्लस इसका सुंदर निदर्शन है।

पढ़ीस जी को तुकांत-अतुकांत सब प्रकार के छंद लिखने में समान सफलता मिली है। उनके मुक्त छंदों में निराला जैसा प्रवाह एवं कौशल है। किसी भी कवि का प्रवाह उनके साहित्य में देखने को नहीं मिलता है, पर परवर्ती कवियों में अनेक ऐसे हैं, जिन्होंने उनसे अच्छी तरह पकड़ प्राप्त की है।

डॉ रामविलास शर्मा ने पढ़ीस जी के विषय में लिखा है- "जैसे धरती से फल-फूल निकलते हैं, उसी प्रकार दीक्षित जी की कविताएं जीवन के ऊर्ध्व अनुभव-क्षेत्र से निकलती हैं। .....कभी वह नगर-निवासियों की स्मृतियों पर हंसता, कभी गांव के युवक-युवतियों के सरल जीवन के गीत गाता और कभी दैविक- भौतिक विपत्तियों से

आहत और पीड़ित होता है, लेकिन प्रधान स्वर हंसी का है, जिसने दुख और विपत्ति में मुस्कुराना सीखा है।"